बुनियादी आपदा जोखिम प्रबंधन

प्रशिक्षण मॉड्यूल

पंचायती राज प्रशिक्षण संस्थान, मशोबरा, जिला शिमला, हिमाचल प्रदेश

विषयसूची

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1	भूमिका	1
2	आपदा प्रबंधन में पंचायती राज संस्थाओं के सामने आने वाली चुनौतियाँ	2
3	मॉड्यूल के उद्देश्य	2
4	लक्षित श्रोतागण	4
5	आपदा प्रबंधन के लिए प्रशिक्षण पद्धति	5
6	प्रशिक्षण मॉड्यूल: आपदा प्रबंधन	5
7	समुदाय आधारित आपदा जोखिम प्रबंधन पर पाँच-दिवसीय टीओटी	6
8	बुनियादी आपदा जोखिम प्रबंधन पर एक-दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यशाला	7

“दुनिया के पास हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त है, लेकिन हमारे लालच को नहीं”

भूमिका

हिमाचल प्रदेश प्राकृतिक आपदाओं के लिए अत्यधिक संवेदनशील है। बाढ़, सूखा, भूस्खलन जंगलों मे आग लगना, बादल फटना और भूकंप हिमाचल प्रदेश में बार-बार होने वाली घटनाएं हैं। आग, महामारी आदि जैसी मानव निर्मित आपदाओं की बार-बार घटनाओं से आपदाओं की संवेदनशीलता और बढ़ जाती है। पर्यावरणीय क्षरण होने के कारण प्रदेश का अस्थितव भी खतरे मे है। इमारतों और बुनियादी ढांचे पर भूकंप के प्रभाव को कम करने और जीवन और संपत्ति के नुकसान को कम करने के लिए भूकंप प्रतिरोधी निर्माण महत्वपूर्ण है। इस प्रकार इंजीनियरों और पंचायती राज संस्थान के अन्य हितधारकों के बीच आपदा प्रतिरोधी निर्माण करने के महत्व के बारे में जागरूकता लाना अति आवश्यक है। पंचायती राज संस्थाओं, आर्किटेक्ट्स, इंजीनियरों और आम जनता को भूकंप के जोखिम और भूकंप प्रतिरोधी निर्माण के महत्व के बारे में शिक्षित करना महत्वपूर्ण है।

पंचायती राज संस्थान (पीआरआई) आपदा प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, विशेष रूप से हिमाचल में, जहां वे विभिन्न विकास और कल्याणकारी गतिविधियों के लिए जिम्मेदार स्थानीय स्व-सरकारी निकायों के रूप में कार्य करते हैं। समुदाय के साथ उनकी निकटता को देखते हुए, पंचायती राज संस्थान आपदा प्रबंधन की तैयारी, प्रतिक्रिया, वसूली और शमन इत्यादि चरणों मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आपदाओं के दौरान पंचायती राज संस्थान समुदाय और उच्च-स्तरीय सरकारी अधिकारियों के बीच एक सेतु का काम करते हैं। वे बचाव और राहत कार्यों का समन्वय करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सहायता प्रभावित लोगों तक कुशलता से पहुंचे। वे स्थानीय राहत आश्रयों के प्रबंधन, प्रभावित व्यक्तियों के लिए भोजन, पानी और चिकित्सा सहायता सहित पर्याप्त सुविधाएं सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार हैं। आपदा के बाद पंचायती राज सस्थानों की संपत्ति, बुनियादी ढांचे और आजीविका को नुकसान की सीमा का आकलन करने में भूमिका निभाते हैं। यह जानकारी वसूली और पुनर्वास प्रयासों की योजना बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। वे आपदा के बाद पानी की आपूर्ति, स्वच्छता और बिजली जैसी आवश्यक सेवाओं को बहाल करने हेतु प्रशासन को सहयोग देने का काम करते है। पंचायती राज संस्थाएं रोजगार योजनाओं, कृषि आदानों के वितरण और वित्तीय सहायता की सुविधा के माध्यम से प्रभावित व्यक्तियों का समर्थन करके स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को सुचारु करने में मदद करती हैं। पीआरआई भविष्य की आपदाओं के प्रभाव को कम करने के लिए बाढ़ प्रतिरोधी सड्कों के निर्माण जैसे लचीले बुनियादी ढांचे के विकास पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वे पर्यावरणीय खतरों को कम करने के लिए वनीकरण, भू-संरक्षण और जल संसाधन प्रबंधन जैसी स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देते हैं। पंचायती राज संस्थाएं जमीनी स्तर पर आपदा प्रबंधन नीतियों और दिशानिर्देशों के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करती हैं, उन्हें स्थानीय आवश्यकताओं और स्थितियों के अनुकूल बनाती हैं।

आपदा प्रबंधन में पंचायती राज संस्थाओं के सामने आने वाली चुनौतियाँ

- संसाधन की कमी:
    - सीमित वित्तीय और मानव संसाधन आपदा प्रबंधन में पंचायती राज संस्थाओं की प्रभावकारिता में बाधा डाल सकते हैं।
- क्षमता निर्माण आवश्यकताएँ:
    - पंचायती राज संस्थाओं के सदस्यों को आपदा प्रबंधन में सर्वोत्तम पद्धतियों के संबंध में नवीनतम जानकारी रखने के लिए उनके प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण की निरंतर आवश्यकता है।
- क्षमता निर्माण आवश्यकताएँ:
    - पंचायती राज संस्थाओं के सदस्यों को आपदा प्रबंधन में सर्वोत्तम पद्धतियों के संबंध में अद्यतन रखने के लिए उनके प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण की निरंतर आवश्यकता है।

निष्कर्ष:

आपदा प्रबंधन में पंचायती राज संस्थाओं की भागीदारी उनकी जमीनी स्तर पर उपस्थिति और समुदाय के साथ सीधे संपर्क के कारण महत्वपूर्ण है। पर्याप्त संसाधनों, प्रशिक्षण और प्राधिकरण के माध्यम से पंचायती राज संस्थानों को मजबूत करने से स्थानीय स्तर पर आपदा तैयारी, प्रतिक्रिया, वसूली और शमन में काफी वृद्धि हो सकती है, जिससे आम जनता आपदा से निपटने के लिए पहले से ही सचेत बन सकती है।

मॉड्यूल के उद्देश्य

1. आपदाओं की अवधारणा को समझना:
    - परिभाषित करें कि प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदाओं सहित आपदा का गठन क्या होता है।
    - विभिन्न प्रकार की आपदाओं, जैसे भूकम्प, बाढ़, महामारियों एवं प्रौद्योगिकीय दुर्घटनाओं में विभेदन कीजिए।
2. जोखिम और कमजोरियों का आकलन:
    - विभिन्न प्रकार की आपदाओं से जुड़े जोखिमों का आकलन करने के तरीके जानें।
    - असुरक्षित आबादी की पहचान करें और उनकी भेद्यता (vulnerability) में योगदान करने वाले कारकों को समझें।
3. योजना तैयारी:
    - विभिन्न प्रकार की आपदाओं के अनुरूप प्रभावी आपातकालीन प्रतिक्रिया योजना बनाने के लिए कौशल विकसित करना।
    - हितधारकों के बीच संचार प्रोटोकॉल और समन्वय तंत्र स्थापित करना।
4. प्रभावी प्रतिक्रिया प्रबंधन:
    - आपदाओं के दौरान की जाने वाली तत्काल कार्रवाइयों का ज्ञान प्राप्त करें, जिसमें खोज और बचाव अभियान, प्राथमिक चिकित्सा और निकासी प्रक्रियाएं शामिल हैं।
    - आपदा प्रतिक्रिया प्रयासों के समन्वय में विभिन्न संगठनों और एजेंसियों की भूमिका को समझें।
5. राहत और वसूली कार्य:
    - प्रभावित आबादी को सहायता वितरित करने और आश्रय, भोजन और चिकित्सा सहायता प्रदान करने के लिए रणनीतियों को जानें।
    - चरण के दौरान बचे लोगों और समुदायों के लिए मनोवैज्ञानिक समर्थन के महत्व को समझें।

7. भूमिकाएं और जिम्मेदारियां:

- आपदा प्रबंधन में सरकारी एजेंसियों, गैर सरकारी संगठनों, सामुदायिक समूहों और व्यक्तियों सहित विभिन्न हितधारकों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों की पहचान करना।
- हितधारकों के बीच साझा जिम्मेदारी और सहयोग की भावना को बढ़ावा देना।

8. केस स्टडी और सर्वोत्तम अभ्यास:

- सीखे गए सबक प्राप्त करने के लिए पिछली आपदाओं और सफल आपदा प्रबंधन पहलों का विश्लेषण करें।
- भविष्य की योजना और प्रतिक्रिया प्रयासों के लिए आपदा प्रबंधन में सर्वोत्तम प्रथाओं को लागू करें।

9. प्रौद्योगिकी और नवाचार का उपयोग:

- आपदा तैयारी, पूर्व चेतावनी प्रणाली और सूचना प्रसार में प्रौद्योगिकी की भूमिका को समझें।

·आपदा प्रतिक्रिया और वसूली कार्यों को बढ़ाने के लिए अभिनव दृष्टिकोण और उपकरणों का अन्वेषण करें।

10. क्रॉस-कटिंग मुद्दे:

- ·आपदा प्रबंधन प्रयासों में लिंग संबंधी विचारों, विकलांग व्यक्तियों को शामिल करने और पर्यावरणीय स्थिरता को संबोधित करना।
- आपदा तैयारी और प्रतिक्रिया गतिविधियों में समानता और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना।

11. संचार और मीडिया प्रबंधन:

- आपात स्थिति के दौरान जनता को महत्वपूर्ण जानकारी देने के लिए प्रभावी संचार कौशल विकसित करना।

12. मीडिया संबंधों को समझें और समय पर और सटीक सूचना प्रसार के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग करें।

13. निरंतर सीखना और सुधार:

- आपदा के बाद के मूल्यांकन आयोजित करके और भविष्य के नियोजन प्रयासों में प्रतिक्रिया को शामिल करके निरंतर सीखने और सुधार की संस्कृति को बढ़ावा देना।
- आपदा प्रबंधन में उभरते रुझानों, प्रौद्योगिकियों और चुनौतियों पर अपडेट रहें।

इन उद्देश्यों के साथ प्रशिक्षण मॉड्यूल को संरेखित करके, प्रतिभागी आपदाओं से प्रभावी ढंग से तैयार करने, प्रतिक्रिया देने और पुनर्प्राप्त करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं।

लक्षित श्रोतागण

पंचायती राज विभाग में आपदा प्रबंधन के लक्षित दर्शकों में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:

- ग्राम पंचायत सदस्य:
  - सभी पंचायत निर्वाचित सदस्य जो ग्राम स्तर पर आपदा प्रबंधन प्रयासों का नेतृत्व करते हैं।
  - पंचायती राज संस्थाओं और लाइन विभाग के अधिकारी:
  - पंचायती राज संस्थानों और लाइन विभाग के सभी अधिकारी जो आपदा प्रबंधन योजनाओं को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- स्थानीय स्वयंसेवक और सामुदायिक नेता:
  - समुदाय के भीतर आपदा जागरूकता और तैयारी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने वाले व्यक्ति।
- महिला और युवा समूह:
  - महिला स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी), युवा क्लबों और अन्य सामुदायिक संगठनों के सदस्य जो आपदा प्रबंधन में भाग ले सकते हैं।
- ·किसान और कृषि आधारित संगठनों के सदस्य:
  - किसान और स्थानीय कृषि संगठनों के सदस्य आपदाओं से प्रभावित होते हैं और तैयारियों और प्रतिक्रिया योजनाओं में योगदान कर सकते हैं।
- स्थानीय स्वास्थ्य कार्यकर्ता:
  - आशा कार्यकर्ता, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और अन्य ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यकर्ता आपात स्थिति के दौरान स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करते हैं।
- शिक्षक और शैक्षणिक संस्थान:
  - स्थानीय स्कूलों और शैक्षणिक संस्थानों के शिक्षक जो आपदा शिक्षा और जागरूकता को बढ़ावा दे सकते हैं।
- ग्राम विकास समितियाँ:
  - ग्रामीण विकास योजनाओं में शामिल समितियों के सदस्य जो आपदा प्रबंधन को अपनी पहल में एकीकृत कर सकते हैं।

इस लक्षित दर्शकों को आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण प्रदान करके, पंचायती राज विभाग आपदा जोखिम को कम करने और ग्रामीण क्षेत्रों में सामुदायिक लचीलापन बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठा सकता है।

आपदा प्रबंधन के लिए प्रशिक्षण पद्धति

इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का डिजाइन भागीदारी अन्वेषण और इंटरैक्टिव लर्निंग पर आधारित है और मास्टर ट्रेनर्स के लिए 5 दिनों की अवधि में वितरित किया जाता है। इसके बाद, तीन, दो या एक दिनों का कार्यक्रम बनाकर हितधारकों को प्रशिक्षण दिया जा सकता है। ग्रुप डिस्कशन, केस स्टडी, प्रॉब्लम सॉल्विंग एक्सरसाइज, डिजास्टर ड्रिल आदि टूल्स की मदद ली जाएगी।

आपदा प्रबंधन की समझ को बढ़ाने के लिए जटिल अवधारणाओं को समझाने के लिए मल्टीमीडिया प्रस्तुतियों, वीडियो और एनिमेशन का भी उपयोग किया जाएगा। आपदाओं से निपटने के लिए सरकार की आपदा से संबंधित विभिन योजनाओं का प्रचार प्रसार किया जाएगा। यथार्थवादी व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने के लिए नियमित मॉक ड्रिल भी की जाएगी। आसानी से समझ में आने वाली भाषा का उपयोग, आपदा जोखिमों और प्रबंधन रणनीतियों को स्पष्ट करने के लिए स्थानीय उदाहरणों और केस स्टडीज का उपयोग, प्रशिक्षण और प्रदर्शन उद्देश्यों के लिए स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों और सामग्रियों का उपयोग किया जाएगा। प्रशिक्षण के लिए स्थानीय भाषाओं और बोलियों का उपयोग, पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं को शामिल किया जाएगा। बाढ़, सूखा और भूस्खलन जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में आम खतरों से कैसे निपटा जाए की जानकारी सांझा की जाएगी। मोबाइल प्रौद्योगिकी, आपातकालीन संपर्क नंबर और संचार रणनीतियों, जोखिम मूल्यांकन, प्राथमिक चिकित्सा, सीपीआर और निकासी विधियों सहित विभिन्न प्रकार की आपदाओं (प्राकृतिक और मानव निर्मित) का अवलोकन, भोजन, आश्रय और मनोवैज्ञानिक सहायता सहित राहत और पुनर्वास सेवाएं प्रदान करने के महत्व के बारे चर्चा की जाएगी।

प्रशिक्षण मॉड्यूल: आपदा प्रबंधन

क्रम संख्या	विषय	विवरण
1	आपदा प्रबंधन का परिचय	- आपदाओं की परिभाषा- आपदाओं के प्रकार (प्राकृतिक, मानव निर्मित)- आपदा प्रबंधन का महत्व
2	जोखिम और भेद्यता को समझना	- जोखिम मूल्यांकन और विश्लेषण- कमजोर आबादी की पहचान- भेद्यता में योगदान करने वाले कारक
3	तैयारी	- आपातकालीन प्रतिक्रिया योजनाओं का विकास- संचार प्रोटोकॉल स्थापित करना- अभ्यास और अभ्यास आयोजित करना
4	प्रतिक्रिया	- आपदा के दौरान तत्काल कार्रवाई- खोज और बचाव कार्य- चिकित्सा सहायता प्रदान करना
5	राहत और वसूली	- सहायता और आपूर्ति वितरित करना- आश्रय और बुनियादी आवश्यकताएं प्रदान करना- बचे लोगों के लिए मनोवैज्ञानिक समर्थन
6	भूमिकाएं और जिम्मेदारियां	- आपदा प्रबंधन में शामिल सरकारी एजेंसियां- एनजीओ और स्वयंसेवी संगठन- सामुदायिक भूमिकाएं और जिम्मेदारियां
7	केस स्टडी और सर्वोत्तम अभ्यास	- पिछली आपदाओं और प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण- सफल आपदा प्रबंधन पहलों से सीख- भविष्य की योजना में सबक लागू करना
8	प्रौद्योगिकी और नवाचार	- आपदा तैयारी और प्रतिक्रिया में प्रौद्योगिकी की भूमिका- पूर्व चेतावनी प्रणाली- जोखिम मूल्यांकन के लिए जीआईएस मैपिंग
9	क्रॉस-कटिंग मुद्दे	- आपदा प्रबंधन में लिंग संबंधी विचार- विकलांग व्यक्तियों का समावेश- राहत प्रयासों में पर्यावरणीय स्थिरता
10	सिमुलेशन अभ्यास	- आपदा परिदृश्यों का अनुकरण- प्रतिक्रिया रणनीतियों और निर्णय लेने का मूल्यांकन
11	संचार और मीडिया प्रबंधन	- आपदाओं के दौरान प्रभावी संचार- मीडिया संबंधों का प्रबंधन- सूचना प्रसार के लिए सोशल मीडिया का उपयोग
12	अंतर्राष्ट्रीय सहयोग	- आपदा प्रबंधन में वैश्विक सहयोग का महत्व- अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की भूमिका- पारस्परिक सहायता समझौते और रूपरेखा
13	कानूनी और नैतिक विचार	- आपदा प्रबंधन के लिए कानूनी ढांचा- संसाधन आवंटन में नैतिक विचार- आपात स्थिति के दौरान मानवाधिकारों का संरक्षण
14	निरंतर सीखना और सुधार	- आपदा के बाद के मूल्यांकन- भविष्य की योजना में प्रतिक्रिया को शामिल करना- उभरते रुझानों और चुनौतियों पर अपडेट रहना
15	निष्कर्ष	- प्रमुख सीखों का पुनर्कथन- लचीलापन-निर्माण के लिए प्रतिबद्धता
16	संसाधन और संदर्भ	- अनुशंसित रीडिंग, वेबसाइट और संगठन- संबंधित एजेंसियों और विशेषज्ञों के लिए संपर्क जानकारी

प्रत्येक खंड इंटरैक्टिव गतिविधियों, केस स्टडीज और सीखने के परिणामों को बढ़ाने के लिए चर्चाओं के साथ होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, आपदा प्रबंधन में व्यावहारिक अनुभव के साथ वास्तविक जीवन के उदाहरणों और अतिथि वक्ताओं को शामिल करना प्रशिक्षण अनुभव को समृद्ध कर सकता है।

समुदाय आधारित आपदा जोखिम प्रबंधन पर पाँच -दिवसीय टीओटी

दिन	सत्र #	समय	सत्र का शीर्षक	विशेषज्ञ
दिन-1		10:00 AM to 10:15 AM	टीएमपी पोर्टल पर प्रतिभागियों का पंजीकरण और पाठ्यक्रम ब्रीफिंग।	
	सत्र-I	10:15 AM to 11:45 AM	आपदा प्रबंधन का परिचय • इसका महत्व • हिमाचल प्रदेश के संदर्भ में आपदा के प्रकार	
		11:45 AM to 12:00 PM	Tea Break	
	सत्र-II	12:00 PM to 1:30 PM	भारत और हिमाचल प्रदेश में आपदा प्रबंधन का संस्थागत ढांचा	
		1:30 PM to 2:30 PM	Lunch Break	
	सत्र-III	2:30 PM to 3:30 PM	समुदाय आधारित आपदा (और जलवायु) जोखिम प्रबंधन	
		3:30 PM to 3:45 PM	Tea Break	
	सत्र-IV	3:45 PM to 5:00 PM	आपदा प्रबंधन में आईसीटी का अवलोकन • आईसीटी महत्व • प्रमुख आईसीटी आधारित दृष्टिकोण	
दिन-2	सत्र-I	10:00 AM to 11:30 AM	हिमाचल प्रदेश में खतरा, भेद्यता	
		11:30 AM to 11:45 AM	Tea Break	
	सत्र-II	11:45 AM to 1:30 PM	न्यूनीकरण और तैयारी योजना: मानक संचालन प्रक्रियाएं	
		1:30 PM to 2:30 PM	Lunch Break	
	सत्र-III	2:30 PM to 3:30 PM	ग्राम आपदा जोखिम प्रबंधन योजना (VDRMP)	
		3:30 PM to 3:45 PM	Tea Break	
	सत्र-IV	3:45 PM to 5:00 PM	जलवायु परिवर्तन: सामना रणनीतियाँ	
दिन-3	सत्र-I	10:00 AM to 10:45 AM	आग जोखिम प्रबंधन	
		11:30 AM to 11:45 AM	Tea Break	
	सत्र-II	11:45 AM to 1:30 PM	अग्निशमन विभाग द्वारा मॉक ड्रिल	
		1:30 PM to 2:30 PM	Lunch Break	
	सत्र-III	2:30 PM to 3:30 PM	आपदा प्रतिरोधी बुनियादी ढांचा	
		3:45 PM to 4:00 PM	Tea Break	
	सत्र-IV	4:00 PM to 5:00 PM	• आपात स्थिति के दौरान बुनियादी खोज और बचाव • सामुदायिक स्तर पर शमन कार्यक्रम	
दिन-4	सत्र-I	10:00 AM to 10:45 AM	आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए आईटी उपकरण	
		11:30 AM to 11:45 AM	Tea Break	
	सत्र-II	11:45 AM to 1:30 PM	आपदा मानचित्रण के लिए जीआईएस	
		1:30 PM to 2:30 PM	Lunch Break	
	सत्र-III	2:30 PM to 3:30 PM	बेसिक लाइफ सपोर्ट (सामान्य आपातकालीन परिदृश्य जिसमें समुदाय को आत्मनिर्भरता की आवश्यकता)	
		3:45 PM to 4:00 PM	Tea Break	
	सत्र-IV	4:00 PM to 5:00 PM	मानवीय मानक और आपदा प्रतिक्रिया (राहत और पुनर्वास)	
दिन-5	सत्र-I	10:00 AM to 10:45 AM	पंचायती राज संस्थाओं में आपदा प्रतिरोधी संरचना	
		11:30 AM to 11:45 AM	Tea Break	
	सत्र-II	11:45 AM to 1:30 PM	कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन (सीपीआर)	
		1:30 PM to 2:30 PM	Lunch Break	
	सत्र-III	11:45 AM to 12:45 PM	आपदाओं और स्व-देखभाल और तनाव प्रबंधन में मनोसामाजिक देखभाल	
		3:45 PM to 4:00 PM	Tea Break	
	सत्र-IV	4:00 PM to 4:45 PM	पशु चिकित्सा राहत प्रबंधन	
		4:45 PM to 5:00 PM	प्रतिक्रिया और निष्कर्ष	

बुनियादी आपदा जोखिम प्रबंधन पर एक- दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यशाला

पंचायती राज विभाग राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान (आरजीएसए) के तहत पंचायती राज मंत्रालय (एमओपीआर) द्वारा वित्त पोषित ग्राम पंचायत विकास योजना (जीपीडीपी) क्षमता निर्माण के तहत अन्य हितधारकों सहित विभाग के निर्वाचित प्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं का क्षमता निर्माण कर रहा है। पंचायती राज विभाग ग्राम पंचायत विकास योजना (जीपीडीपी) के प्रशिक्षण के साथ बुनियादी आपदा जोखिम प्रबंधन पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम जोड़ेगा। पंचायती राज विभाग न केवल पंचायती राज मंत्रालय द्वारा आवंटित अपने कार्य को पूरा करेगा बल्कि बुनियादी आपदा जोखिम प्रबंधन में अन्य हितधारकों सहित विभाग के निर्वाचित प्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं को भी शिक्षित करेगा। मास्टर प्रशिक्षक सभी तीन पंचायती राज प्रशिक्षण संस्थानों अर्थात पीआरटीआई, मशोबरा, थुनाग और बैजनाथ में प्रशिक्षण प्रदान करेंगे, इस प्रकार हिमाचल प्रदेश राज्य के सभी जिलों को कवर किया। लगभग 5500 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया जाएगा। बुनियादी आपदा जोखिम प्रबंधन प्रशिक्षण आयोजित करने के लिए आरजीएसए के तहत लागू 1500 रुपये प्रति प्रतिभागी प्रति दिन समान दरें राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण से ली जाएंगी। मास्टर ट्रेनर्स के 5 दिनों के क्षमता निर्माण के तहत विषयों को रोटेशन के आधार पर एक दिवसीय प्रशिक्षण में शामिल किया जाएगा ताकि बुनियादी आपदा जोखिम प्रबंधन के सभी आवश्यक विषयों को कवर किया जा सके।

पंचायती राज प्रशिक्षण संस्थान, मशोबरा, जिला शिमला, हिमाचल प्रदेश